પક્ષધર

संस्थापक : दूधनाथ सिंह : 1975

पक्षधर

प्रतिरोध की संस्कृति का रचनात्मक हस्तक्षेप

अंक : 12 जनवरी, 2012

संपादक

विनोद तिवारी

सहायक संपादक

तेजभान

अक्षर संयोजन

कॉम्पैक्ट प्रिन्टर्स
ई-17, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32
आवरण : सुरेन्द्र राजन

मूल्य

एक प्रति : 50 रुपये

सदस्यता

चार अंकों के लिए : 200 रुपये
संस्थाओं के लिए : 300 रुपये
पंचवार्षिक : 500 रुपये
दस वार्षिक : 1000 रुपये
आजीवन : 2500 रुपये

संपादन/प्रकाशन : अवैतनिक/अव्यावसायिक

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक विनोद तिवारी द्वारा बी-2, तीसरी मंजिल, महेन्द्रू एन्क्लेव, स्टेडियम रोड, दिल्ली-110033 से प्रकाशित और दिव्या ऑफसेट प्रिन्टर्स, बी-1422, न्यू अशोक नगर, मयूर विहार, दिल्ली-96 से मुद्रित।

प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। संपादक और लेखक की अनुमति के बिना प्रकाशित सामग्री के किसी भी तरह के उपयोग की अनुमति नहीं होगी।

संपादकीय संपर्क

बी-2, तीसरी मंजिल, महेन्द्रू एन्क्लेव
स्टेडियम रोड, दिल्ली-110033
फ़ोन : 011-27240496
मो. : 09968423949
ई-मेल : pakshdharwarta@gmail.com

PAKSHDHAR
A Literary bi-annual Magazine
Editor : Vinod Tiwari
Language : Hindi

ISSN : 2231-1173

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त।

समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

पक्षधर संस्थापक के पचहत्तर वर्ष पूरे होने
पर समर्पित है पक्षधर का यह अंक

अनुक्रम

संपादकीय

पक्षधर मेरे लिए नशा है 5

एक कवि : एक राग

दस कविताएँ/ **विनोद कुमार शुक्ल** 7

बाँसुरी का होना संगीत का संदर्भ है/ **विनोद कुमार शुक्ल** 13

आलेख

रामलीला : धर्मसत्ता और हमारा समय/ **जीवन सिंह** 26

राष्ट्रीय काव्यधारा और राजनीति/ **सुधीर रंजन सिंह** 42

पंत और अज्ञेय : प्रकृति काव्य और काव्य-प्रकृति/ **अवधेश प्रधान** 55

हिन्दी दलित कहानी : संवेदना और सरोकार/ **राम चंद्र** 60

उपन्यास अंश

मल्लू मठफोड़वा/ **राकेश रंजन** 76

लंबी कविता

चार पुरुष और स्वर्णयुगों पर शोकगीत/ **विवेक निराला** 96

बात कहूँ मैं खरी

विचारधारा एक सामाजिक अन्तर्ज्ञान है/ **जयनंदन** 121

कहानी

और कितने यौवन चाहिए ययाति?/ **अशोक कुमार पाण्डेय** 126

नौ बच्चों की माँ/ **कृष्णकान्त** 147

कविता

काम वाली बाई अभी आई है/ **संजीव बख्शी** 159

छः कविताएँ/ **शंकरानंद** 165

तीन कविताएँ/ **जितेन** 169

रेखाचित्र

लोक संगीत गुरु और शिष्य का मिलन/ **पी. सी. जोशी** 173

पुस्तक समीक्षा

मुर्दहिया : सामाजिक पड़ताल का साहित्यिक पैमाना/ **जय कौशल** 190

शालीन और संयत स्मृति-लेखा/ **पल्लव** 196

तोड़ दो यह क्षितिज मैं भी देख लूँ उस ओर क्या है/ **चन्द्रशेखर** 199

पक्षधर मेरे लिए नशा है

मैं पक्षधर नशेड़ी हूँ। पक्षधर मेरा नशा है। मैं इस नशे का आदी हो चुका हूँ। जहाँ भी रहूँ यह नशा मुझसे छूटता नहीं, मैं इसे छोड़ता नहीं। नशे के बारे में कहा जाता है कि यह लत दूसरे लगाते हैं, परन्तु मैंने इस नशे को खुद गले लगाया है। हाँ, यह जरूर था कि पक्षधर के एकांकी संपादक और तत्कालीन 'माध्यम' संपादक श्री सत्यप्रकाश मिश्र दोनों ने मुझे बरजने की, आगाह करने की कई कोशिशें कीं पर वे नाकाम रहे। शायद वे इसी नशे से मुझे बचाना चाहते थे। सत्यप्रकाश जी अब रहे नहीं पर दूधनाथ जी ने पत्रिका की बेहतरी के लिए उसके शुरुआती अंकों में जिस तरह अपने अनुभव से मुझे सहेजा वह मेरे लिए एक तरह की ट्रेनिंग थी। आज भी वह पत्रिका को लेकर बहुत ही सचेत रहते हैं। कोई चूक हो जाती है तो इस कदर बेरुखी से झाड़ते हैं कि कहते न बने। पर कभी-कभी वह यह भी कहकर छूटना चाहते हैं कि ''भाई अब मुझे बख्श दो अब मैं बूढ़ा हुआ।'' दूधनाथ जी 75 के हुए हैं, बूढ़े कहाँ हुए हैं। 75 पूरे होने पर हम सबकी अनंत शुभकामनाएँ कि वह सालों-साल गिनती में बड़े होते जाएँ पर बूढ़े न हों। दूधनाथ जी कभी-कभी किसी गलती पर इस कदर तल्ख़ होते हैं कि आपके साथ गैर से भी बदतर पेश आते हैं। दरअसल उनका 'मम' उस समय सब कुछ को परे कर अत्यंत ही निर्मम हो जाता है। तभी तो उनके जानने चाहने वाले कहते हैं—

काम उससे आन पड़ा है, कि जिसका जहान में
लेवे न कोई नाम सितमगर कहे बिगैर

जब मैं बिना किसी ढोल-मंजीरे के तुर्की आने लगा तो मेरे कुछ मित्रों ने यह सवाल किया कि पक्षधर का क्या होगा? कैसे निकलेगी? क्या अब पक्षधर बंद हो जाएगी। मैंने सबको कहा कि नहीं, पक्षधर बंद नहीं होगी वह तुर्की से भी निकलती रहेगी। एक ने कहा कि ''मैं आपका उत्साह देखूँगा।'' दरअसल, पक्षधर जब मैंने शुरू किया तो यह सोचकर नहीं कि इससे मुझे क्या फायदा या नुकसान होगा। हाँ! एक जूनून जरूर था कि नहीं, एक पत्रिका बनारस में रहते हुए शुरू की जा सकती है। उस जूनून में कहीं न कहीं पत्रिका के लिए एक बेइंतहा जिद्दी प्यार शामिल था। वह प्यार धीरे-धीरे परवान चढ़ता गया। अब तो उसने अपने रंग में मुझे इस कदर रंग लिया है कि न निकल पाता हूँ न भाग पाता हूँ।

दिलकश ऐसा कहाँ है दुश्मने जाँ
मुद्दई है पे मुद्दआ है इश्क
.....
क्या कहूँ मैं तुमसे कि क्या है इश्क
जान का रोग है बला है इश्क